Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 3, Petersburg 1861

mit 2. दी und दिव् *Himmel.*

— caus. दीपयति; aor. अदिदीपत् und अदीदिपत् P. 7,4,3. Vop. 18,3. *in Flammen setzen, anzünden:* पुनस्त्वा (d. i. अग्ने) दीपयामसि P. 7,1,46, Sch. Kauç. 60. Pañkav. Br. 16,1. med. Âçv. Gṛhj. 4,6. अग्नौ — ज्ञानदीपिते Bhag. 4,27. लङ्कामग्निनादीदिपन् Bhatt. 15,110. दीपः — कुशलदीपितः MBh. 3,13984. जतुगृहद्वारं दीपयामास 1,5828. 13,2888. तदस्य दीप्यताम् (pass.) R. 5,49,3. (बाणैः) शरीरं दीपयिष्ये ऽहमुल्काभिरिव कुञ्जरम् 6,34,24. ब्रह्मास्त्रं दीपयां चक्रे MBh. 5,7296. *anfachen, erwecken, erregen, aufregen:* विविधं संहिताज्ञानं दीपयन्ति मनीषिणः MBh. 1,53. अदिदीपत् — कुसुमेषुम् Çiç. 9,42. दीपितकामा (प्रावृष्) Bhartṛ. 1,41. प्रज्ञां दीपयन्तो Bhâg. P. 4,26,16. अदीदिपत्ततो वीर्यम् Bhatt. 15,82. निर्वेदाद्दीपितो भूयः क्लैव्यं मा गन्तुमर्हसि R. Gorr. 2,116,5. *erhellen, erleuchten:* दीपिकादीपिते प्रदेशे Hariv. 14530. वृन्दावनान्तरमदीपयदंशुजालैः — इन्दुः Gît. 7,1. तपनमण्डलदीपित Kir. 5,2. Bhâg. P. 3,17,14. *einen Glanz über Jmd verbreiten:* अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च u. s. w. MBh. 5,1069 = 1233.

— intens. *in hellen Flammen stehen, stark leuchten, — glänzen:* तस्य यद्रेतसः प्रथमं देदीप्यते तदसावादित्यो ऽभवत् Cit. aus der Çruti (vgl. Ait. Br. 3,34 u. — उद्) bei Kull. zu M. 5,1. का त्वम् — देदीप्यमानाग्निशिखेव नक्तं व्याधूयमाना पवनेन MBh. 3,15588. (मायाम्) देदीप्यन्तीमग्निशिखामिवोग्राम् 7,8138. देदीप्यन्ते पुण्यशीलास्तु नाके 13,3532. Varâh. Bṛh. S. 42 (43), 6. Bhâg. P. 6,9,14. देदीप्यमानां वपुषा श्रिया च MBh. 3,2146. तितिक्षया तपसा विद्यया च। देदीप्यमाने ऽजितदेवतानां कुले Bhâg. P. 4,21,36.

— अति, partic. अतिदीप्त *stark flammend, heftig brennend:* हुताशन R. 5,50,8.

— अभि *entgegenflammen:* सो ऽस्त्रं तदभिदीप्यन्तमापतन्तं (masc.!) शितैः शरैः। तस्तम्भे Hariv. 7501. — caus. *Helle verbreiten:* अग्रमेष्योषधीनां ज्योतिषेवाभिदीपयन् AV. 4,19,3.

— अव caus. *anzünden* Kauç. 80.

— आ, partic. आदीप्त *flammend, in Brand stehend, strahlend:* °वह्नि Ṛt. 6,19. Bhatt. 3,3. गृह MBh. 1,5829. वन 15,1081. आदीप्तमिवाम्बरं सादिग्दाहं विचरति सप्तार्चिः Varâh. Bṛh. S. 31,13. आदीप्तानिव — सर्वतः पुष्पितान्नगान् R. 2,56,6. मुनिमादीप्ततेजसम् 3,16,34. — caus. *in Flammen setzen, anzünden:* आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयो ऽन्तरिक्षा Ṛv. 6,22,8. Çat. Br. 6,6,1,23. आदीप्य TS. 2,2,4,7. Çat. Br. 12,4,4,6. 14,1,3,15. Kâtj. Çr. 26,3,3. वपया मुखमवच्छाद्याग्निभिरादीपयति 25,7,36. समिधम् Çâñkh. Çr. 2,8,9. Kauç. 30. 46. 75. 81. MBh. 1,5822. 4,1980. 13,2776. R. 2,89,16. 3,75,51. 5,52,4. Suçr. 1,32,13. 2,365,6. Kathâs. 15,120. 16,14. Bhâg. P. 4,28,50. त्रैलोक्यं येन (धूमेन) — आदीपितमिवाभवत् R. 1,65,8. — Vgl. आदीपन.

— उपा, partic. उपादीप्त *flammend, brennend:* अग्निरिषित उपादीप्तः Çat. Br. 7,3,1,21.

— व्या caus. *ganz erhellen, — erleuchten:* क्षणेन सर्वे विहिताः प्रदीपा व्यादीपयन्तो ध्वजिनीं तवाशु MBh. 7,7296. 13,4092.

— उद् *aufflammen:* तस्य यद्रेतसः प्रथममुददीप्यत तदसावादित्यो ऽभवत् (vgl. oben u. d. intens.) Ait. Br. 3,34. उद्दीप्यसे भानुना Çat. Br. 7,3,1,30. 2,2,2,16. उद्दीप्यस्व जातवेदः Kauç. 70. Pañkav. Br. 13,3. उद्दीप्त *leuchtend, strahlend, glänzend* AK. 3,4,25,194. — caus. *in Flammen setzen, entzünden, anfachen, anfeuern, reizen* AV. 12,2,5. Kauç. 70. 86. वायूद्दीपितो वह्निः Hariv. 5321. न वैरमुद्दीपयति प्रशान्तम् MBh. 5,1082. 1,2427. कामम् Bhâg. P. 8,8,46. 2,7,33. रसम् Sâh. D. 160. रामजनार्दनौ। नागेनोद्दीपितौ Hariv. 5910. उद्दीपयन्देवगणान् Bhâg. P. 8,7,11. *erhellen:* दीपप्रभयोद्दीपितम् Mṛkkh. 49,11. — Vgl. उद्दीपन fg.

— प्रत्युद् *entgegenflammen:* तस्मात्तत्प्रत्युद्दीप्यते Çat. Br. 6,6,2,13.

— समुद् caus. *anfachen:* समुद्दीपय तेजस्त्वम् R. 4,26,14.

— उप caus. *in Flammen setzen, Feuer anlegen an:* समन्ततो ऽग्नीनुपदीपयित्वा MBh. 3,10230. (निवेशनम्) तदुपादीपयत् 1,5828. ततः काष्ठैस्तृणैः u. s. w. उपादीप्यत शैलेन्द्रः सूर्यपादैरिवाम्बुदः Hariv. 5520.

— परि *aufwallen:* क्रुध्यन्ति परिदीप्यन्ति भूमिपायाधितिष्ठते MBh. 12,2036. *in vollem Glanze stehen:* पर्यदीप्यन्त तेजांसि तथानर्थाश्च नाभवन् 7,2237.

— प्र *aufflammen* Çat. Br. 9,2,3,37. Varâh. Bṛh. S. 45,18. प्रदीप्त *in Flammen stehend, brennend:* अग्नि Çat. Br. 6,3,3,1. Bhag. 11,29. R. 1,54,22. 3,42,10. 51,29. Pañkat. III, 234. उल्मुक Âçv. Gṛhj. 3,10. उल्का Varâh. Bṛh. S. 32,30. प्रदीप्तभासा रविणा Ṛt. 1,27. इध्म Çat. Br. 3,5,2,1. MBh. 2,1127. प्रदीप्तमिव काननम्। ददर्श पुष्पस्तवकैः R. 2,96,26. 5,49,12. 50,6. Suçr. 1,18,14. ते शराः खसमुत्थेन प्रदीप्ताश्चित्रभानुना MBh. 5,7196. 7213. R. 3,54,28. लोक Suçr. 1,114,2. प्रदीप्तेव च मन्युना MBh. 3,2374. प्रदीप्त इव शोकेन R. 2,57,21. शिरस्तावत्प्रदीप्तं मे पादौ चैव MBh. 13,4616. नासा (s. दीप्त) Suçr. 2,370,6. *glänzend:* श्रियं हित्वा प्रदीप्ताम् 12,546. *erleuchtet:* चैतन्यप्रदीप्ताभिरतिसूक्ष्माभिरज्ञानवृत्तिभिः Vedântas. (Allah.) No. 32. — Als Auguralausdruck (vgl. दीप्त unter दीप्) im Gegens. zu पूर्ण: किलिकिलिविरुतं कपेः प्रदीप्तं न शुभप्रदमुद्दिशन्ति Varâh. Bṛh. S. 87,22. 31. ये ऽन्ये स्वरास्ते कथिताः प्रदीप्ताः पूर्णाः शुभाः पापफलाः प्रदीप्ताः 33. 95,5. ग्राम्यः (शकुनः) प्रदीप्तः स्वरचेष्टिताभ्याम् 7. — caus. *anzünden, in Flammen —, in Gluth versetzen, anfachen:* शालाकान्प्रदीप्य Kâtj. Çr. 10,6,14. तस्यागारं प्रदीपयेत् MBh. 1,5600. तेजसाग्नेः प्रदीपितः 13,4037. अयं मां विपुलः शोकः प्रदीपयति R. 3,69,21. मन्मथेन प्रदीपिता MBh. 3,1819. कामं प्रदीपयति Varâh. Bṛh. S. 76,40. — Vgl. प्रदीप, प्रदीपन.

— संप्र, partic. संप्रदीप्त *in Flammen stehend:* अग्नि Çâñkh. Çr. 4,15,1. Hariv. 2502. उल्कासहस्रैश्च सुसंप्रदीप्तैः MBh. 6,2650. R. 5,52,13. (शक्तिम्) संप्रदीप्तां महोल्काभाम् MBh. 6,4101. 7,7306. संप्रदीप्त इवाग्निना 1,6587. — caus. *in Flammen setzen:* संप्रदीपितसर्वाङ्गौ सायकैस्तौ महारथौ MBh. 7,7237.

— प्रति, partic. प्रतिदीप्त *entgegenflammend:* °वक्त्र Hariv. 13155.

— वि *flammen, hell leuchten:* व्यदीपन्त (sic) दिशः सर्वाः प्रदीपैस्तैः समन्ततः MBh. 7,7322. विदीप्ततेजस् 12,8332. — caus. *in helle Flammen setzen, hell erleuchten:* व्यदीपयंस्ते पृतनाम् MBh. 7,3954. नानावर्णाश्च चित्राश्च पताकाः पवनेरिताः। विद्युदिन्द्रधनुर्नद्धं रथं दिव्यं व्यदीपयन्॥ 8,1488. तदासनप्रवरं प्राप्य व्यदीपयत राघवः। स्वयेव प्रभया मेरुमुदये विमलो रविः॥ R. 2,3,34 (Gorr. 2,21). partic.: क्षणेन हि दिशः खं च सर्वतो हि विदीपितम् MBh. 3,11970. क्रोधविदीपिताङ्गाः (असुराः) Hariv. 12750. रोषविदीपितः Bhâg. P. 9,4,46. दिव्यौषधिविदीपितम्। नाकम् MBh. 1,1105. 13,6370. शरद्गुणविदीपितः। एष वै विमले व्योम्नि दृष्टो

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007